

## वह परमेश्वर जो हमें छुड़ाना चाहता है

अच्छा ,  
मैं कोशिश करके आपको दोबारा इकट्ठा करना चाहता हूँ।

मैंने सोचा कि यह समय था एकत्रीत होने का और  
इस सप्ताह के बड़े विषय पर लक्ष केंद्रित करने का।

मैंने आपसे पिछले सप्ताह ही कहा था की हम हमेशा  
एक बड़े विचार को चुनते हैं,

और इस सप्ताह का विषय है 'वह परमेश्वर जो  
हमें छुड़ाना चाहता है'।

और मैंने सोचा की आज रात की शुरूवात मैं आपको  
कोई कल्पना करने के लिए कहकर करूँगा,

कि, मैंने मेरी उदारता में, यह निश्चय किया है कि  
मैं हम में से हर एक जन का पूरा खर्च उठाऊंगा

एक केरिबीयन जाने वाले सैर के जहाज  
पर यात्रा करने के लिए।

यह कैसा लगता है?  
क्या यह अच्छा लगता है?

अच्छा ,हम में कुछ को सचमुच अपनी  
कल्पनाओं का उपयोग करना होगा।

आप सोच रहें होंगे, 'यह स्कॉटलैंड निवासी इतना  
उदार कैसे हो सकता है?' परंतु ये रहा।

हम सब मेरे खर्च पर  
कैरिबीयन जा रहे हैं

और मैंने आरामदायक कैबिन्स के लिए खर्च किया है,

आपके पास ऐशो-आराम है...  
आप में से कुछ लोग मुस्कुरा रहे हैं - बढिया भोजन,

आपके पास सबकुछ सबसे उत्तम है, ठीक है?

अब, एक समय मैं आप सभी को देखता हूँ।

आप ने अभी रात का भोजन किया है। आपने  
एक बढिया दावत की है...

...और अब आप बॉलरूम में है,

आप पार्टी कर रहे हैं, आप एक मज़ेदार, मज़ेदार  
समय बिता रहे हैं।

और तब आपका ध्यान जाता है  
की मैं बॉलरूम में आया हूँ

और मैं उस नृत्य स्थल के बीच में हूँ,

मैं अपनी आवाज को ऊंचा करता हूँ,  
आप नाचते हुए अच्छा समय बीता रहे हैं,

और मैं अपनी आवाज को उठाता हूँ और कहता हूँ ,  
'मुझे जीवन नय्या मिल गई हैं।'

अच्छा, आप क्या सोचते हैं? क्या आप कहते हैं,  
'हाँ! शाबाश, ली!'

क्या आप सोचते हैं, 'हाँ, मुझे लगा था की वह विचित्र था,  
परंतु अब....अब मुझे पक्का पता चल गया है।

कोई उसे कोने में ले जाए और सिर्फ यह  
निश्चित करे की वह चूप रहे,'?

यह विचित्र है ,है ना?

अगर मैं कमरे में आऊँ और दहाड़ कर कहूँ,

'मुझे जीवन नय्यां मिल गई है,'  
और मैं सिर्फ यही कहता हूँ ,इसका कोई मतलब नहीं बनता।

परंतु सिर्फ विचार कीजिए की आप रात में नाच  
रहे हैं और मैं बॉलरूम में आता हूँ

और मैं कहता हूँ, 'यारों आपका ध्यान भंग करने  
के लिए माफी चाहता हूँ, परंतु अभी मैं बाहर गया था।

क्या आपको उस उछाल का आभास हुआ?  
वह एक बर्फ का टिला था,

मैंने अभी कहा है...' (श्रोतागणों की हंसी)

विश्व की गरमाहट। यह आश्चर्यजनक  
है कि बर्फ के टिले कहाँ जाते हैं।

'और मैंने मुख्य अभीयंता से बात की है,  
और उसने मुझे यह बताया है कि जहाज़ डूबनेवाला है।

परंतु मैं जीवन नय्या का रास्ता जानता हूँ। अब,  
क्या इससे कुछ बदला?

हाँ बिलकुल बदला। अगर मैं कमरे में आता हूँ,  
और सबसे पहले आपको बताता हूँ।

की हम खतरे में हैं, अगर मैं आपको पहले यह  
बताऊँ की यहाँ एक बड़ी, बड़ी समस्या है,

और तब मैं बताऊँ की मैंने हल खोज लिया है,

मैंन उपाय खोज लिया है, तब इससे बदलाव आता है।

अगर मैं अचानक आऊँ और कहूँ,  
'मेरे पास उद्धार की बड़ी महान खबर है,'

और तब भी आपको समस्या नहीं बताऊँ,  
तो इसका कोई मतलब नहीं बनता।

अच्छा, आज रात हम सभी बचाव के  
सबसे बड़े मिशन को देखने जा रहे हैं

और मेरा यही मतलब है, सबसे बड़ा बचाव का मिशन सभी के लिए:

परमेश्वर का सबसे बड़ा बचाव जो हमें बड़ी,  
बहुत बड़ी समस्या से बचाता है।

परंतु जबतक हम यह नहीं समझते की हमें  
किस चीज़ से बचनेकी जरूरत है,

तो यह हमे सुसमाचार बिलकुल भी नहीं  
लगेगा। तो मैं आशा करता हूँ की यह ठीक है।

हम समस्या को देखेंगे और हम उसके हल को देखेंगे,

हम यूहन्ना के सुसमाचार से देखने जा रहे हैं,  
तो अगर आपके पास यूहन्ना के सुसमाचार की प्रति हैं,

मेरे साथ यूहन्ना अध्याय 3 को निकाले,  
और मैं आय 16-21 तक पढ़ने जा रहा हूँ।

यूहन्ना अध्याय 3, मैं आयत 16 से आगे पढ़ रहा हूँ।

और यह यीशु बोल रहे हैं , और वह यह कहते है:

“क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा  
कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया,

ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो,  
परंतु अनंत जीवन पाए।

परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं  
भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे,

परंतु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।

जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती,

परंतु जो उस पर विश्वास नहीं करता वह दोषी ठहर चुका

इसलिए कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम  
पर विश्वास नहीं किया।

और निर्णय यह है: ज्योति जगत में आई है,

और मनुष्यों ने अंधकार को ज्योति से अधिक  
प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे।

क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है,  
और ज्योति के निकट नहीं आता,

ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए।

परंतु जो सत्य पर चलता है,  
वह ज्योति के निकट आता है,

ताकि उसके काम प्रगट हों कि वह परमेश्वर की  
ओर से किए गए हैं।”

अब जो सबसे पहला वचन मैंने पढ़ा वह

बाइबल के उन वचनों में से एक है जो हमें  
हमारी राहों में रुकने पर मजबूर करते हैं।

“क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि  
उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया।”

यह बाइबल उन अंशों में से है,  
जिनहे हमें जानना चाहिए,

‘एक मिनट रुकें।

क्या आपने यह सचमुच में कहा है?’

इसे हमारे ध्यान को खींचना है।  
हमें इसे निहारते हुए सोचना है,

‘क्या यह सचमुच सच है?’

और तो भी, ज्यादातर बार जब इसे पढ़ा जाता है,  
तब ऐसा होता नहीं है, है ना?

अब इसके लिए कई अलग कारण है:  
कुछ लोगों के लिए

यह बहुत आम बात है, तो वह सिर्फ सोचते हैं,  
‘हाँ, ठीक हैं।’

“क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा...”  
मैंने यह पहले सुना है।’

परंतु कुछ दूसरे लोगों के लिए,  
क्योंकि हम अपने-आप को जैसे देखते हैं,

क्योंकि परमेश्वर की नज़र में हम अपने  
आप को जैसे देखते हैं,

तो यह आश्चर्य की बात नहीं, क्या है?  
क्योंकि बहुत सारे लोग अपने आप को

बहुत बढ़िया और प्यारे समझते हैं।  
क्या यह सही नहीं है?

जब वह अपने-आप को आइने में देखते हैं  
तब वह शायद अपने-आप को यह ना कहते हो,

परंतु वास्तव में अपने-आप की अंदरूनी गहराई  
में वह सोचते हैं की वह भले-चंगे हैं।

और इसलिए, तो परमेश्वर हमसे  
क्यों ना प्रेम रखें?

क्या आप, उदाहरण के लिए,  
आश्चर्यचकित होंगे अगर आज रात मैं आपसे कहूँ,

सब लोगों के सामने, की मैं अपनी पत्नी से प्रेम करता हूँ?

क्या आप सोचेंगे, ‘सचमुच? क्या यह हो सकता है?’  
आप अपनी पत्नी से प्रेम करते हैं?’

और उनके लिए जो मेरी पत्नी को जानते हैं ,  
आप जानते हैं की वह मेरे लिए बड़ी प्यारी हैं

और प्रेम से भरी हैं। तो आप यह नहीं कहने जा रहें,  
'ओह ,एक मिनट रकें। क्या आप ने सच में कहा

“मैं अपनी पत्नी से प्रेम करता हूँ”?’ आप कह सकते हैं,  
“ज़रा ऊल्टि करने वाली थैली पकड़ाना,”

परंतु आप यह नहीं कह सकते, 'भयानक!'

आप मुझसे ऐसा हि करने कि अपेक्षा करते हैं  
उसके मेरे प्रति बरताव के कारण।

अब, बहुत लोग सोचते हैं ,  
'अच्छा, परमेश्वर हमसे प्रेम क्यों नहीं करेगा?

सच में हम प्रेमपूर्ण और प्यारे हैं  
और दयालु और अच्छे।

पता है, परमेश्वर हम में से किसी एक को  
अपना फेसबुक मित्र क्यों नहीं बनाना चाहेगा?

हाँ बिलकुल, वह यह करना चाहता हैं।'

अच्छा ,यह सचमुच महत्वपूर्ण है क्योंकि

अगर हम अपने आपको अच्छा और बढ़िया  
और दयालु समझते हैं,

हम कभी भी अपने आपको परमेश्वर के छुटकारे  
के जरूरतमंद नहीं समझेंगे।

और इसलिए मैंने सोचा की हमारे लिए यह भला  
होगा की हम कुछ समय के लिए सोचें।

की क्यों ज्यादातर लोग परमेश्वर की नज़र में  
अपने आप-को अच्छा समझते हैं।

अब, मैं सोचता हूँ की इसके दो मुख्य कारण है की  
क्यों ज्यादातर लोग अपने आप-आपको अच्छा समझते हैं।

मैं सोचता हूँ की इसका प्रथम कारण यह है कि  
हम अपना स्तर बहुत निचला रखते हैं,

और दूसरा यह कि बहुत से लोगों की अच्छा व्यक्ति  
होने की परिभाषा मे यह उल्लेख

नहीं होता कि हम परमेश्वर के साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

अब, मैं एक-एक करके उन्हें लेता हूँ।  
सोचिए उस स्तर के बारे जिसका हम उपयोग करते हैं।

बहुत लोगों के अच्छाई का स्तर  
सचमुच बहुत, बहुत निचला होता है।

अब, ज़रा इसके बारे में सोचें।  
जरा सोचिए की मुझे बड़ी चाहत है

ओलंपिक्स में जाने की। क्या  
आप सोचते हैं, 'हाँ!'

आप एक मंझे हुए खिलाडी जैसे दिखते हैं, '?'

आप सोचते हैं, 'हाँ।'  
आप इससे पहले ओलंपिक्स में क्यों नहीं गए?'

और मैं निर्णय लेता हूँ कि मैं ऊंची छलांग लगाने  
के क्षेत्र में माहिर बनूँगा।

अब, मैं समर्पित और रुची से भरा हूँ ,  
तो मैं ऐसा करता हूँ की हर रात

मैं घर जाता हूँ और बाहर मेरे पीछे वाले बगीचे में  
अपनी ऊंची छलांगे लगाने के लिए प्रबंध करता हूँ।

ठीक है, तो मैं दोनों तरफ ईंटें लगाता हूँ  
और मैं कपड़ों की रस्सी

या बांस लाता हूँ --- वास्तव में  
हम धनवान परिवार से हैं -

तो हम इसे लगाते हैं, और यह ये रहा।

और हर रात, मैं क्या करता हूँ,  
मैं उसके पार छलांग लगाता हूँ। और मैं फिर पीछे कूद के

अपनी पत्नी को बुलाकर कहता हूँ, 'देखो, मैंने इसके ऊपर  
से छलांग लगाई है। मेरी ओर देखो! छलांग लगा रहा हूँ।'

यह बढ़िया है। और मैं ऐसा हर रात करता हूँ।

और सावधान, क्या होता है...  
मैं ब्रिटीश ओलंपिक टीम में शामिल होता हूँ।

ओह ,यह बड़ा ही गर्व का समय है। मैं वहाँ हूँ ,  
स्टेडीयम के अंदर झंडा लेकर जाते हुए।

और अब मेरा खेल हैं।

यह ऊंची छलांग हैं।

और मैं काफी समय से इसका रियाज़ करता रहा हूँ।

अब, मुझे क्या पता चलता है, भयानक बात,

जब मैं वहाँ पहुँचता हूँ?

वे उस बांस को इस ऊँचाई पर नहीं रखते, नहीं ना?

वह उस बांस को बहुत ऊँचाई पर लगाते हैं।

तो सारा समय मैं अपने स्तर तक पहुँच रहा था।

बिलकुल मैं अपने स्तर तक पहुँच रहा था।

समस्या यह थी कि, मेरा स्तर

बहुत नीचे था।

अब ,कई बार जब हम अच्छाई के बारे में सोचते हैं

और हम लोगों से कैसा बर्ताव करते हैं,

हमारे स्तर सचमुच बहुत नीचे होते हैं। लोग सोचते हैं,

'मैं एक अच्छा व्यक्ति हूँ।

क्यों? अच्छा, क्योंकि मैं अपने-आप को अपने

-आप तक ही रखता हूँ,

मैं किसीको कोई हानी नहीं पहुँचाता,

मैं ऐसे ही अपने जीवन को जीता रहता हूँ।'

परंतु, ये परमेश्वर के स्तर नहीं है,

और हम दूसरे लोगों से कैसा बर्ताव रखते हैं।

परमेश्वर चाहता है की हम सक्रीय तरीके से

उनके साथ प्यार भरा आचरण रखें,

हमारे शब्दों से उन्हें

अपमानित न करें।

तो शायद आपने शारीरिक रीति से

किसी को चोट ना पहुँचाइ हो,

परंतु हममें से कितनों ने ऐसे शब्दों कहे हैं

जिनसे सचमुच लोगों को चोट पहुँची और वे बरबाद हुए?

हमारे स्तर कितने निचले हैं। और परमेश्वर

के स्तर बहुत ऊँचे हैं।



आप अपने आप में सोचेंगे, 'हम दूसरे मनुष्यों से कैसा व्यवहार रखते हैं परमेश्वर इसकी परवाह क्यों करता है?'

अच्छा, ज़रा इस के बारे में सोचें। क्या आपका कोई ऐसा रिश्तेदार था

जिसे आप जानते हैं कि किसी के द्वारा चोट पहुँचाई गई या अपमानित किया गया था?

क्या आप पर इसका असर नहीं होता? बिलकुल होता है, क्योंकि आप उनके बारे में सोचते हैं,

आप उनसे प्रेम करते हैं, और जब कोई उन्हें चोट पहुँचाता है जिनसे आप प्रेम करते हैं,

बिलकुल आप पर इसका असर होता है। अच्छा, तो हमने पिछले सप्ताह क्या पाया था?

हमने पाया था कि परमेश्वर ज़िम्मेदार है, प्रत्येक वस्तु का निर्माणकर्ता। वे सब उसके हैं।

और इसलिए जब हम दूसरे लोगों को अपमानित करते हैं और चोट पहुँचाते हैं, वह प्रभावित होता है।

प्रथम कारण कि हम अपने आप को अच्छा समझते हैं:

क्योंकि हमारे स्तर बहुत निचले हैं। अब, दूसरा कारण है

कि बहुत सारे लोग जिस प्रकार से अच्छाई की परिभाषा करते हैं। इसके बारे में सोचें।

अगर आपको स्वभाविक रूप से सड़क पर चलना पड़े,

और एक अजनबी को रोक कर उससे कहें, 'मुझे बताओ...?'

मैं जानता हूँ यह थोड़ा अजीब लगता है और शायद आपको यह नहीं करना चाहिये, परंतु केवल कहें,

'आप अच्छाई कि परिभाषा कैसे करेंगे?'  
वे क्या कहेंगे?

अच्छा, वे अक्सर इस बारे में बात करेंगे की वे दूसरों से कैसा बर्ताव करते हैं।

अक्सर ऐसा कहते हैं, 'मैं अपने को अपने-आप तक रखता हूँ और मैं किसी और को कोई चोट नहीं पहुँचाता हूँ,'

परंतु हर बार, जब आप उनको सुनते हैं, वे परमेश्वर का उल्लेख नहीं करते,

वे यह नहीं बताते की वे अपने निर्माणकर्ता से कैसा बर्ताव रखते हैं।

तो यह सब आड़ा है (लोगों से)। परमेश्वर के साथ कोई खड़ा (सीधा) रिश्ता नहीं है।

परंतु यह हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है की हम सोचें की परमेश्वर से हमारा बर्ताव कैसा है।

हम उस परमेश्वर से कैसा बर्ताव रखते हैं जो हमें सारी चीज़ें देता है?

हम उस परमेश्वर से कैसा व्यवहार रखते हैं जो हमने पाया कि हमारी हर ज़रूरतों को पूरा करता है,

जो हमें हमारी हर एक साँस देता है?

हम उस परमेश्वर से कैसा व्यवहार रखते हैं?

अच्छा, ज्यादातर लोगों का परमेश्वर के साथ कोई बड़ा झगड़ा नहीं हुआ है, है क्या?

अधिकतर लोगों ने अपनी मुट्ठी को परमेश्वर के सामने हिलाते हुए उसपर गुस्से से नहीं चिल्लाए।

कुछ लोगों ने किया है। परंतु हम में से अधिकतर लोग उसे नज़रअंदाज करते हुए जीवन को आसानी से लेते हैं।

हम आगे बढ़ते हुए उसकी दुनिया में रहते हैं और हम कैसे जीएंगे इसका निर्णय लेते हैं।

मैं सोचता हूँ अगर कोई है जिसने उस विषय धून को तैयार किया

जो बताती है की हम कैसे जीते हैं , तो वह व्यक्ति है फ्रँक सिनाट्रा, है ना?

आप को शब्द याद है, है ना?

'पछतावा। मुझे थोड़ा हुआ था।

परंतु फिर, बताने के लिए ये बहुत कम है।

मैंने वह किया जो मुझे करना था।

मैंने बिना छूट के उसे देखा।

मैंने हर सुनिश्चित श्रृंखला की योजना बनाई,

पूरे रास्ते में हर कदम सोचा समझा।

और अधिक, इससे भी कई अधिक....'

क्या आप इसे पूरा कर सकते हैं? 'मैंने किया....'

प्रेषक: 'मेरे तरीके से।'

ली: बिलकुल आप कर सकते हैं।

'मैंने किया मेरे तरीके से।'

यह बढ़िया सारांश है बहुत सारे लोगों के

जीवन की विषय धून का।

अब, इसका मतलब यह नहीं की हम परमेश्वर

जो कहता है उसे कभी नहीं करते।

बिलकुल कभी-कभी परमेश्वर जो कहता है हम करते हैं ,

परंतु इसके बारे में सोचें की ऐसा क्यों है।

हम करते हैं क्योंकि अक्सर हम सोचते हैं,

'हाँ, यह मुझे यह पसंद है।

यह मुझे ठीक लगता है।

और इसलिए मैं यह करूँगा।'

परंतु हमारे जीवन का कौन अधिकारी है

इसकी सही परीक्षा तब होती है

जब परमेश्वर हमसे कुछ करने को कहता है,

और हम कहते हैं,

'मुझे ऐसा नहीं लगता।' यह सचमुच दर्शाता है की

हमारे जीवन का अधिकारी कौन है।

जब ऐसी स्थिति होती है कि परमेश्वर हमें कुछ कहता है

और हम सोचते हैं यह तो घिसी-पिटी बात है

या आज के ज़माने के लिए यह सही नहीं।

अब, आप अपने आप में सोच रहे होंगे ,  
'अच्छा, ऐसे जीने में क्या बुराई है?

'मेरे तरीके से' गाने में क्या बुराई है?  
सचमुच यह तो सिर्फ व्यक्तिगत चुनाव है।'

हमारी संस्कृति में के बहुत लोग  
इसे 'खुद की अभिव्यक्ति' कहेंगे।

शायद हम इसे साधारणतया  
सिर्फ बड़ा होना भी कह सकते हैं

इस में क्या गलत है की हम परमेश्वर की दुनिया में  
रहकर और 'मेरे तरीके' की विषय धून गाएं?

अच्छा, जरा इसे सोचीए।

थोड़ी देर के लिए कल्पना करें किसी की  
जो एक सुंदर सम्पत्ती का मालिक है।

ठीक है, यह बढ़िया घर है,  
इसमें सभी सुख हैं,

और उन्होंने अपना सारा पैसा खर्चा किया है यह देखते  
हुए की सबसे उत्तम वहाँ हो।

क्या यह आपकी कल्पना में बैठ गया है?  
बढ़िया सोफा ,बढ़िया कुकर

बढ़िया फ्रिज, बढ़िया कालीन.....  
यह इस तरह के कालीन है

जिस पर आप चलते हुए सोचते हैं,  
'ऊह-ऊह! यह प्यारा है!'

अब, इस जगह का मालिक, वे इस घर में कुछ  
किराएदार रखना चाहते हैं।

और वे हर चीज़ का प्रबंध करेंगे,  
वे यह निश्चित करेंगे कि

उनकी देखभाल हो, उनके सारे  
बिजली और गैस के बिल चुकाएँ जाएँ,

और वे कुछ किरायेदार चाहते हैं।  
तो इस बढ़िया घर के लिए उन्हें

कुछ किराएदार मिलते हैं,  
और आप जानते हैं की क्या होता है?

प्रत्येक सप्ताह उस जगह के मालीक की ओर से एक  
लिफाफा आता है

जिसके साथ एक भेंट भी होती है। यह खूब बढ़िया है।  
वह वास्तव में उनकी देखभाल करता है।

परंतु वह उनकी ओर से कभी नहीं सुनता।

उसे कभी कोई किराया नहीं मिलता  
उस जगह में रहने के लिए।

उसे उनसे कभी कोई खबर नहीं मिलती।  
वह उन्हें पत्र लिखता है, वह सोचता है कि क्या वे ठीक होंगे,

परंतु कुछ नहीं, कुछ नहीं, कुछ नहीं।  
तो वह निर्णय लेता है की वह उनसे जाकर मिलेगा।

और वह वहाँ आता है, और वह अपनी चाभियों को  
निकालता है और अंदर जाने की कोशिश करता है,

और वह हैरान होता है, जब वह पाता है की  
ताले बदल दिए गए हैं।

खैर, वह दरवाजे को खटखटाता है,  
वह ज़ोर से दरवाजा बजाता है, और वह कहता है, 'कोई है!'

और वह परदों को देखता है,  
और तब वहाँ कुछ आवाजें आती हैं,

'आप यहाँ क्या कर रहे हैं?  
आपका यहाँ क्या काम है?'

'अच्छा, तो यह मेरा घर है।  
मैं देखना चाहता था की आप ठीक हैं।'

'ओह, इस जगह से चले जाओ। यह हमारी है!  
हम आपको यहाँ आस-पास भी नहीं देखना चाहते।'

परंतु वह उनसे प्रार्थना करता है और वह  
दरवाजे के भीतर आता है।

और जैसे ही वह दरवाजे को खोलता है, वह देखता है की  
जो सारे पत्र उसने लिखे थे, वह नज़रअंदाज किए गए हैं।

वह चलता है और उसकी आँखे खुली रह जाती है क्योंकि वह आस-पास की सारी बरबादी को देखता हैं।

उसने उन्हें बताया था की इस जगह को कैसा रखना है,

उस जगह से किस तरह व्यवहार रखना है , और यहाँ तो गडबड़ है।

आपको बताऊं, उन्होंने टी.वी खराब कर दिया है, उन्होंने सोफा खराब कर दिया है,

वहाँ चारों ओर सिर्फ गंदगी है, यह पूरी तरह और बिलकुल खराब परीस्थिती दिखाई देती है।

और फिर वे खोजते हैं की पूरी दिवार पर उसके बारे में लिखा है

की वह कैसा निर्दयी है, वह कैसा अत्याचारी है...

अब, इस वक्त आप क्या सोच रहे हैं? क्या आप सोच रहे हैं,

‘अच्छा, उसका क्या अधिकार है की वह इस जगह आए और...’?

नहीं ,आप सोच रहे हैं, ‘यहाँ कुछ सही नहीं हैं।’

बिलकुल।

जरा सोचीए की यह परमेश्वर से कैसे संबंधित है।

हम परमेश्वर के जगत में है, उसके जगत मे रह रहे हैं।

वह एक सुंदर, अद्भुत निर्माणकर्ता हैं।

वह हमें सारी चीज़ें उपलब्ध कराता है , और तोभी हम उससे कैसा बर्ताव रखते हैं?

जब तक हम उसकी दुनिया में रहते है, हम उसे नज़रअंदाज करते हैं,

हम उसे वह स्तुती और महिमा और आदर नहीं दते जिसका वह हक्कदार है,

हम उसकी दुनिया को खराब करते हैं,  
हम उसके द्वारा निर्मित जीवों को चोट पहुँचाते हैं...

आप क्या सोचते हैं वह कैसा प्रतिउत्तर देगा?  
अच्छा, मुझे लगता है की बड़ा प्रश्न यह है:

क्या परमेश्वर कभी आएगा?

या वह इसे ऐसे ही चलते रहने  
के लिए को छोड़ देगा?

बाइबल वादा करती है की एक ऐसा दिन है  
जब हम में से हर एक जन

अपने निर्माणकर्ता के सामने खड़ा होगा और इस  
दुनिया में हम कैसे

जीए इसका हिसाब उसे देना पड़ेगा।  
अब, मैं नहीं सोचता की यह बुरी खबर है।

मैं सोचता हूँ यह वास्तव में अच्छा समाचार है।  
क्या आप न्याय के दिन की राह नहीं देखते?

आप जानते हैं जब आप टी.वी चलाते हैं  
और अखबार खोलते हैं

और दुनिया की अनेक  
भयानक बातों को देखते हैं।

और जो बुरे काम लोग करते हैं लगता है  
वे बच भी निकले हैं।

और आप सोचते हैं,  
'मैं एक न्याय का दिन चाहता हूँ।'

क्या आप न्याय का दिन नहीं चाहते,  
जब सारी गलतियों को सही किया जाएगा?

यह अच्छी बात है।  
हम चाहते हैं कि ऐसा हो।

परंतु हम सचमुच  
वह न्याय के दिन यह चाहते हैं

की हम परमेश्वर के न्यायालय में हों, परंतु कहाँ?

हम चबुतरे पर होना चाहते हैं, है ना?  
हम वहीं होना चाहते हैं।

हम न्याय का एक दिन चाहते हैं,  
परंतु हम चबुतरे में होना चाहते हैं

नीचे लोगों को वह पाते हुए देखते हुए  
जिसके वे योग्य हैं।

और तोभी परमेश्वर कहते हैं, 'नहीं।  
हम में से हर एक जन उस कटघरे में होगा।'

अब, हमारे साथ क्या होगा?

अच्छा, हम जानते हैं कि कठोर गुनाह कठोर  
दण्ड के हक्कदार होते हैं।

और इससे ज्यादा कठोर क्या हो सकता है की  
हम परमेश्वर के जगत में रहते हैं, उसे नज़रअंदाज करते,

उसे अपमानित करते, उसके द्वारा निर्मित  
जीवों को चोट पहुँचाते और उसकी दुनिया को बिगाड़ते हैं।?

हमारे निर्माणकर्ता से बगावत करने से  
ज्यादा गंभीर और क्या हो सकता है?

दुनिया इसे कहती है आत्म- अभिव्यक्ति,  
अपनी क्षमता तक पहुँचना।

बाइबल इसे बगावत कहती है  
अपने प्रेमी निर्माणकर्ता के विरुद्ध।

हम किस चीज़ के योग्य हैं? क्या होगा?

अच्छा, बिना यीशु के, जैसा की हम देखेंगे,  
हम अनंत क्रोध के लिए ठहरते हैं।

परमेश्वर की उपस्थिति से त्यागे हुए।  
उसके प्रेम से त्यागे हुए।

फिर भी सम्पूर्ण अनंतकाल के लिए उसके सिद्ध न्याय का  
अनुभव लेने के लिए।

और फिर भी...यह रहा सुसमाचार।

याद कीजिए मैंने कहा था....बुरे समाचार की पाशवभूमि।  
आपको इसे समझने की ज़रूरत है।



परंतु यह रहा सुसमाचार।  
दोबारा आयत 16 और 17 को देखें।

मैं सोचता हूँ यह अद्भुत है।

हमने इन्हें पहले पढ़ा है ,  
परंतु जो हमने अभी पढ़ा उसकी पृष्ठभूमि ध्यान में रखते हुए

इन शब्दों को दोबारा सुने:  
“क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा...”

किस प्रकार के जगत से?  
जिस जगत ने उसके साथ ऐसा व्यवहार किया।

इस प्रकार के जगत से परमेश्वर ने प्रेम किया।  
और उसने किस तरह प्रेम किया?

अच्छा, “उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया,  
ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे

वह नष्ट न हो परंतु अनंत जीवन पाए।  
परमेश्वर ने अपने पुत्र को

जगत में इसलिए नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे,  
परंतु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।”

तो 2000से ज्यादा वर्ष पहले,  
परमेश्वर पिता ने अपने एकलौते पुत्र को भेजा।

सब के लिए, एक अत्यधिक नाटकीय छुटकारे के मिशन पर  
हमारे प्रति उसके प्रेम के कारण।

और यह वह छुटकारे का मिशन हमें उस सही  
न्याय से बचाने के लिए था जिसके हम योग्य हैं

अब प्रश्न यह है कि,  
यह कैसे हो सकता है कि यीशु हमें

उस न्याय से बचा सकता है जिसके हम योग्य हैं?  
इस पुस्तक को खोलें। उसके पन्नों को पढ़ो,

और आप क्या पाएंगे?  
समापन, यीशु के छुटकारे के मिशन का मध्य

हमें विचित्र लगता है। क्योंकि यह सबकुछ  
तो उसके क्रूस पर मृत्यु की तरफ बढ़ रहा है।

यह काफी अलग है, है ना?  
कभी-कभी आप महा नायकों के बारे में सोचते हैं,

और वे उड़ते हुए आते हैं और नाटकीय  
रूप से लोगों को बचाते हैं, और यीशु आता है,

और वह कहता है 'मैं तुम्हें बचाने जा रहा हूँ  
क्रूस पर मरने के द्वारा।'

यह विचित्र है। यह अजीब है  
यह कैसे हो सकता है?

अच्छा, अगर आप अपने विचारों को पीछे लेके जाएँगे  
की कुछ समय पहले हम क्या सोच रहे थे,

हमें यीशु को फसक के पर्व के  
मेम्ने के रूप में देख रहे थे।

हमने बाइबल के पुराने भाग की  
कहानी के बारे में सोचा

जब परमेश्वर के लोग मिस्र में थे,  
और जब उन्हें परमेश्वर के न्याय

का अनुभव लेना चाहिए था, और तोभी  
परमेश्वर ने छुटकारे का एक मार्ग उपलब्ध कराया।

एक मेम्ने को मारा जाना था।  
और अगर वह मारा जाता

और उसका खून दरवाज़े की पट्टीयों पर लगाया जाता,  
परमेश्वर वहाँ से गुज़रता

और तोभी उस घर को लांघ कर चला जाता जहाँ मेम्ने की  
बली दी गयी थी,

और परमेश्वर का गुस्सा लांघ कर चला जाता क्योंकि  
एक मेम्ने कि, बदले में, बली दी गई है।

यीशु कौन है? वह परमेश्वर का मेम्ना है,  
जो हमारे लिए फसह का मेम्ना बनने के लिए आता है।

तो वह क्रूस पर मरा,  
एक ही बार और अंतिम बार,

वह उस न्याय को लेगा,  
जिसके योग्य मेरे और आप जैसे लोग हैं,

मेरे और आप जैसे विरोधी है...  
वह हमारे बदले में था,

एक बलीदान। और हम सभी जानते हैं  
की 'बदले में' का क्या अर्थ है।

अगर आपके पास अपनी चहेती टीम या  
आपका चहेता खेल है।

और मैदान में एक खिलाड़ी खेल रहा है  
और आप जानते हैं वह बेकार है,

आप टीवी के परदे को देख क्या चिल्लाते हैं?  
'इसे बदल दो!

आप इसके बदले किसी और  
को क्यों नहीं ला रहे?'

और हम जानते हैं की उसका मतलब क्या है।  
'बदले में' यानी किसी दूसरे की जगह लेना।

अच्छा, यीशु फसक के पर्व के मेम्ने जैसा  
हमारी जगह लेने आया।

वह सिद्ध था।  
और तौभी वह मेम्ना न था, था क्या?

वह कौन था?  
वह परमेश्वर का अनंत पुत्र था।

तो आप अपने-आपसे पूछते हैं,  
'एक व्यक्ति कैसे सम्भवतया

अन्य करोड़ों व्यक्तियों का न्याय  
अपने ऊपर ले सकता है?'

अच्छा, सोचिए वह कौन था। वह  
परमेश्वर का दैवी, अनंत पुत्र,

सदा के लिए बेशकीमती, हम जैसे  
जीए उसका दाम चुकाते हुए।

अब, यह अद्भुत है, है ना?  
परंतु यह अपने आप नहीं हो जाता।

आयत 18 को देखें।  
यह बेहतरीन है, परंतु यह अपने आप नहीं हो जाता।

आयत 18, यीशु कहते हैं, “जो उस पर विश्वास करता है,  
उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती,

परंतु जो उस पर विश्वास नहीं करता  
वह दोषी ठहर चुका

इसलिए कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम  
पर विश्वास नहीं किया।”

मुझे उस वाक्य के पहले कुछ शब्द बहुत अच्छे लगते हैं।  
पहला: ‘जो कोई’।

यह बेहतरीन है, है ना? ‘जो कोई’

तो यीशु कहते हैं की आपने भूतकाल में जो  
किया यह मायने नहीं रखता।

यह मायने नहीं रखता की आप  
किस संस्कृति से आए है,

आपकी त्वचा का रंग क्या है, आप किस धर्म को मानते है...

इससे बिलकुल कोई फर्क नहीं पड़ता: ‘जो कोई’।

और मुझे अगले शब्द भी अच्छे लगते है:  
‘जो कोई विश्वास करता है’।

तो वह यह नहीं कहता, ‘जो कोई बहुत बढ़ियां है।  
जो कोई परिश्रम करता है।

जो कोई पर्याप्त अंक पाता है स्वर्ग में जाने के लिए,  
तो वह ठीक होगा।’

वह सीधे कहता है, ‘जो कोई मुझ पर विश्वास करता है।’

सिर्फ एक अस्थिर विश्वास नहीं, परंतु उसमें विश्वास।

अब, इसका मतलब क्या है? इसका मतलब यह नहीं  
की उसकी चीजों के बारे में विश्वास करना।

इसका मतलब केवल यह विश्वास करना नहीं  
की यीशु अस्तित्व में थे।

इसका मतलब है यीशु में व्यक्तिगत विश्वास।

इसका मतलब है उसके आगे समर्पण करना। इसका  
मतलब सक्रीय तरीके से उसपर विश्वास करना।

इसका मतलब है कि हम जैसे भी हैं वैसे यीशु के पास आना,  
पहले अपने जीवन को साफ करना नहीं,

परंतु सिर्फ हम जैसे हैं वैसे आना और उसको हमारा  
अधिकारी बनाना। यही विश्वास का अर्थ है।

और यीशु कहते हैं, 'जो कोई मुझ पर विश्वास करता है,  
उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती।'

परंतु यह अपने आप नहीं हो जाता।

वह मरा है, परंतु हमें उसके पास आना है  
उसके छुटकारे का लाभ लेने के लिए।

अब, इस को समझने का एक तरीका इस तरह हो सकता है:

ज़रा कल्पना कीजिए, अगर मैं आपको उस जहाज़ तक  
वापस ले जा सकूँ जहाँ से हमने शुरुवात की थी,

और मेरे जीवन नैय्या के उदाहरण तक। तो हम वहाँ हैं।

हम डूबते जहाज़ में हैं।

हम जानते हैं हम डूबते जहाज़ पर हैं,

हम विश्वास करते हैं की यह नीचे जाने वाला है,  
हम जानते हैं की हमें इससे बाहर निकलना चाहिए।

और हम जानते हैं की वहाँ जीवन नैय्या है।

अब...हम क्या करते हैं?

अच्छा, कई विभिन्न चीज़ें हैं जो आप कर सकते थे।

आप सिर्फ बैठे या खड़े रह सकते थे और जीवन नैय्या को  
हमेशा के लिए देखते रह सकते थे...

घूरते... आप शायद जीवन नैय्या भी पसंद करते हों।

ऐसा भी हो सकता है की आप इस तरह के व्यक्ति हैं जो  
जीवन नैय्या मासिक के नियमित ग्राहक हैं।

आप जानते हैं, यह आपकी पत्रिका भी हो सकती है।  
या आप ऐसा कर सकते हैं

की कुछ दोस्तों को इकट्ठा करके सोचें,  
'क्या आपको जीवन नैय्या पसंद है? बढ़ियां।

क्या आप जीवन नैय्या पसंद करते हैं? क्या आप  
आकर जीवन नैय्या के बारे में मुझसे बातें करना चाहेंगे?

बढ़िया।' और आप लंबे समय तक जीवन नैय्या  
को निहार सकते हैं

और जीवन नैय्या के बारे में वह सबकुछ जान  
सकते हैं जिसे जाना जा सकता है।

परंतु क्या आप सुरक्षित होंगे? नहीं।  
क्योंकि आपको क्या करना चाहिए?

आपको सिर्फ अंदर प्रवेश करना है।  
बस आपको यही करना है।

यीशु कहते हैं, 'जो कोई मुझ पर विश्वास करता है।'  
जो कोई उस नाव के अंदर आता है वह बचाया जाएगा।

अच्छा, मैं सोचता हूँ आज रात मैंने आपको सोचने  
के लिए काफी कुछ दिया है,

तो क्यों ना आप वापस अपने समूहों में जाकर इन  
बातों पर बातचीत करें

और देखें की आप कहाँ तक पहुंचते हैं।

Identity – Who is God? Who are we?

© Lee McMunn, 2011

All rights reserved. Except as may be permitted by the Copyright Act, no part of this publication may be reproduced in any form or by any means without prior permission from the publisher.

Published by 10Publishing, a division of 10ofThose Limited.

All Hindi scripture quotations are taken from Hindi-O.V. © The Bible Society of India.

10Publishing, a division of 10ofthose.com  
Unit 19 Common Bank Industrial Estate, Ackhurst Road, Chorley, PR7 1NH, England.  
Email: info@10ofthose.com  
Website: www.10ofthose.com